हिन्दुस्तानके पुतलीघर

रजि० नं० बी४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १०

सम्पादक—प्यारेलाल

अंक ५०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाभी देसाभी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १९ जनवरी १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

श्रीरामपुरकी डायरी

[यह डायरी अलग-अलग अखबारोंमें छपी अखबारी खबरों परसे तैयार की गअी है। खयाल यह है कि अिस तरह, पढ़नेवालोंको गांधीजीकी वे सब बातें अेक जगह पढ़नेको मिल जाया करें, जो अपनी जिन्दगीके अिस बहुत ही अहम मिशनके दरमियान वे मौक़े-मौक़ेसे कहते रहते हैं। —सम्पादक]

आबादीकी अदला-बदली

श्रीरामपुरमें गांधीजीके साथ रहनेवाले अखबारोंके नामा-निगारों या संवाद-दाताओंको अुनके सवालोंका जवाब देते हुअे गांधीजी ने कहा—"आबादीकी अदला-बदलीका सवाल न तो सोचने लायक़ है, न अमल करने लायक़।"

अिसके बाद गांधीजी ने फिर यह कहा—"यह सवाल मेरे दिलमें कभी पैदा ही न हुआ। हरअेक सूबेमें रहनेवाला हरअेक आदमी हिन्दुस्तानी है, फिर वह हिंदू हो, मुसलमान हो या दूसरे किसी धर्मको माननेवाला हो। पाकिस्तानी हुकूमतके पूरी तरह क़ायम हो जाने पर भी अिस हालतमें कोअी फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।"

आगे चलकर गांधीजीने कहा—"मेरे खयालमें आबादीकी अदला-बदलीके सवाल पर ग़ौर करनेका मतलब यह होगा कि हिन्दुस्तानकी समझदारी और अुसके मुस्तक़बिलका या दोनोंका ही दिवाला निकल गया है। अैसी किसी कार्रवाअीके क़ुदरती नतीजों पर सोचते हुअे दिल काँप अुठता है।" और फिर अुन्होंने अपनी तरफ़से यह सवाल पूछा कि—"क्या अिस रास्तेको अपनानेसे हिन्दुस्तानके अैसे बनावटी टुकड़े न बन जायँगे, जिनमें अलग-अलग धर्मों या मज़हबोंको माननेवाले लोग अलग-अलग रहते होंगे?"

गांधीजीसे अेक सवाल यह पूछा गया कि क्या आजकी निहायत डाँवाडोल हालतमें आबादीके हेर-फेरका तरीक़ा अख़्तियार करनेमें समझदारी न होगी? अिसके जवाबमें गांधीजीने कहा—"मुझे अैसी कोअी चीज़ दिखाअी नहीं पड़ती, जिसकी वजहसे अिस तरीक़ेको अपनाना ज़रूरी हो जाय। यह तरीक़ा तो हारे-थके और नाअुम्मेद लोगोंका ही हो सकता है, चुनाँचे, बिलकुल आखिरी अिलाजके तौर पर, और सो भी किसी खास हालतमें ही, यह अख़्तियार किया जा सकता है।"

नोआखालीका पैग़ाम

अिसके बाद जो सवाल पूछा गया, वह यों था—"आपने अुस दिन कहा था कि पूरबी बंगालमें आपके रहनेकी कोअी मीयाद नहीं है। तो क्या आप यह सोचते हैं कि श्रीरामपुरमें बैठे-बैठे आप सुलह और शान्तिका अपना पैग़ाम नोआखालीके दूसरे गाँवों तक पहुँचा सकेंगे?"

गांधीजीने जवाब दिया—"यह न समझिये कि मैं यहाँ, श्रीरामपुरमें ही, लम्बे अरसे तक पड़ा रहनेवाला हूँ। और, यहाँ भी मैं बेकार तो नहीं बैठा हूँ न? यहाँ बैठा-बैठा भी मैं आस-पासके गाँववालों और दूसरे लोगोंसे मिलता रहता हूँ। अिस बीच मैं यहाँकी असल हालतको समझनेकी कोशिश कर रहा हूँ, और साथ ही, अपने जिस्मकी खोअी हुअी ताक़त भी बढ़ा रहा हूँ। असलमें मेरा अिरादा यह है कि जब ज़रूरी और मुमकिन हो, तभी मैं अिधरके गाँवोंका पैदल दौरा करूँ, और घर-बार छोड़कर भागे हुअे बे-आसरा लोगोंको समझाअूँ कि वे वापस अपने-अपने गाँवोंमें रहने चले जायँ। अुन्हें अच्छी तरह समझानेके लिअे यह ज़रूरी है कि पहले मैं खुद यहाँ की हालतको देख-समझ लूँ। मैं देख रहा हूँ कि आज महज़ मेरी बातोंका कोअी खास असर नहीं होता। आपसके अविश्वासकी जड़ें अितनी गहरी पैठ गअी हैं कि आज लोगोंको दो बातें ज़ोरसे कहने या समझानेभरसे काम नहीं चल सकता।"

"अँधेरा मेरे अन्दर है"

अिसके बाद गांधीजीसे यह पूछा गया कि चारों तरफ़ यह खबर फैल गअी है कि आप खुद अँधेरेमें भटक रहे हैं। अिस खबरमें कितनी सचाअी है? आपने यह अँधेरा कब महसूस किया? अिसकी वजह क्या हुअी? अिस अँधेरेमेंसे आपको कोअी रास्ता निकलता नज़र आता है या नहीं?

गांधीजीने कहा—"मेरे खयालमें यहाँ मुझे यह कहना चाहिये कि अिस खबरमें बहुत सचाअी है। मैं बाहरी हालतोंसे बेचैन नहीं हुआ हूँ। अिस अँधेरेकी वजह मेरे अन्दर ही मौजूद है। मैं देख रहा हूँ कि हिन्दू-मुसलमानोंके आपसी ताल्लुक़ातके बारेमें मेरी अहिंसा कोअी रास्ता नहीं सुझा रही है। जब नोआखालीकी वारदातोंके समाचार मुझे मिले, तभी यह चीज़ मेरे दिलमें ज़्यादा गहराअीके साथ पैठी।

"और, जब मैंने सुना कि यहाँ ज़ोर-ज़बरदस्तीसे लोगोंका धर्म बदला गया है, और यहाँकी बहनोंको कअी तरहसे सताया गया है, तो मैं बहुत ही बेचैन हो अुठा। हालत अैसी न थी, जिसमें मेरे लिखने या बोलनेभरसे कोअी नतीजा निकल सकता। अिसलिअे मैंने अपने आपसे कहा—जहाँ तुझे काम करना है, वहीं पहुँच जा, और जिस अुसूलके बल पर आज तक तू टिका है, और जिसकी बदौलत तुझे अपना जीवन सफल मालूम हुआ है, अुस अुसूलकी सचाअीको कसौटी पर चढ़ा।

"मैंने सोचा, क्या सचमुच ही मेरी अहिंसा कमज़ोरोंका हथियार है, जैसा कि मेरी टीका करनेवाले हमेशासे कहते आये हैं, या दर-असल वह बहादुरों और बलवानोंका हथियार है? नोआखालीकी वारदातें जिस बीमारीकी बाहरी निशानीभर हैं, अुस बीमारीका कोअी तैयार अिलाज या हल जब मुझे न सूझा, तभी यह सवाल अेकदम मेरे दिलमें खड़ा हुआ।

"यही वजह है कि मैं अपने दूसरे सभी कामोंसे किनारा खींचकर अिस बातका पता लगानेके लिअे फ़ौरन ही नोआखाली चला आया कि आखिर मैं कहाँ खड़ा हूँ। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अहिंसाका मेरा हथियार सब तरह पूरा और पक्का हथियार है। अगर आज वह मेरे हाथमें ठीक काम नहीं दे रहा है, तो अुसकी वजह मेरी अपनी कोअी कमी है, मेरे काम करनेके तरीक़ेकी कोअी खामी

www.vinoba.in

है। दूर बैठे-बैठे अपनी अिस खामी या कमीका पता लगाना मुमकिन न था। अिसलिअे अपनी खामीको खोजनेकी कोशिशमें मैं यहाँ आ पहुँचा हूँ। अब जबतक मुझे अुजेला नजर नहीं आता, तबतक मुझे यह क़बूल करना होगा कि मैं अँधेरेमें भटक रहा हूँ। यह अुजेला मुझे कब दीखेगा, सो तो अेक भगवान् ही जानता है। अिससे ज़्यादा मैं कुछ कह नहीं सकता।

"मेरी अहिंसाकी कड़ी कसौटी"

अेक मद्रासी अखबारके नामा-निगारने गांधीजीसे नीचे लिखा सवाल पूछा था—"क्या आप यह महसूस नहीं करते कि बंगालके वजीर यहाँ आपकी अिस मौजूदगीको अपने लिअे अेक जुल्म समझ सकते हैं, और यह सोच सकते हैं कि बाहरवाले तो यही खयाल करते होंगे कि यहाँ हम अपनी अिन्साफ़-पसन्दीकी वजहसे, भागे हुअे और बे-आसरा लोगोंको वापस लाने और बसानेकी जो कोशिशें कर रहे हैं, सो सब गांधीजीकी मौजूदगीके कारण ही करते हैं?"

गांधीजीने जवाब दिया—"आप क़ुबूल ही अेक चीज अपने दिलमें मान लेते हैं; ताहम अगर आपकी मानी हुअी बात सच हो, और अुसे हक़ीक़तका बल हो, तो आपका यह क़यास सच हो सकता है, और मेरा यहाँ रहना अहिंसाके साथ बेमेल ठहर सकता है। खुशक़िस्मतीसे मैं यहाँ, अविश्वास और सन्देहसे घिरे अिस वातावरणमें, अपनी अहिंसाको परखनेके लिअे ही आया हूँ।

"मेरा दावा है कि दुनियाके अिस हिस्सेमें बसनेवाले हिन्दुओंकी तरह ही मैं यहाँके मुसलमानोंका भी दोस्त हूँ। आप याद कीजिये कि दक्खिनी अफ्रीकासे वापस हिन्दुस्तान आनेके कुछ दिनों बाद ही मैं चम्पारन गया था। वहाँ जानेपर सरकारकी तरफ़से मुझे यह हुक्म दिया गया था कि मैं चम्पारन जिला छोड़कर चला जाअूँ। अुस हुक्मको तोड़नेके लिअे मुझपर मुकदमा चलाया गया, और मुझे सजा सुनाअी गअी। लेकिन अुस वक़्तके वाअिसरायके अेक हुक्मसे मेरी वह सजा रद कर दी गअी, और मुझे सजा देनेवाले मजिस्ट्रेटको यह हिदायत दी गअी कि वह न सिर्फ़ मुझे गैरसरकारी तौरपर जाँच करनेकी अिजाजत दे, बल्कि अुसमें मेरी मदद भी करे। अिसका नतीजा यह हुआ कि मुझे सरकारकी तरफ़से मुक़र्रर किये गये स्लाय कमीशनमें अुसके अेक मेम्बरके नाते काम करनेकी दावत दी गअी, और अेक सौ साल पुराना अन्याय दूर किया गया।"

औरतोंको सलाह

जब रोजकी तरह कल भी गांधीजी शामके वक़्त हवाखोरीको निकले, तो धानके अेक खेतके कोनेमें खड़ी कुछ बहनोंने बरसती आँखों अुनसे भेंटकी, और अुन्हें अपनी मुसीबतोंकी रामकहानी सुनाते हुअे बताया कि आजकल वे किस तरह अपने दिन बिता रही हैं।

अपनी आँखके आँसू पोंछते-पोंछते अेक बुढ़ियाने गांधीजीसे कहा—"महात्माजी! आप हमें बताअिये कि हम क्या करें। जब हम देखती हैं कि गाँवमें हमारे जान व माल की हिफ़ाजतका कोअी अिन्तजाम नहीं है, तो आप ही कहिये कि अुस हालतमें हम किस तरह अपने गाँवोंमें जायँ और रहें?"

गांधीजीने अुनसे कहा—"जबसे नोआखाली आया हूँ, तभीसे मैं आप सबको बराबर यह कहता रहा हूँ कि सब निडर बन जाअिये। जब अिस तरह निडर बनकर आप अपने सब काम करेंगी, तभी आप यहाँ अमन-अमानके साथ, सुलह व शान्ति से जी सकेंगी।" अिसके बाद आसमानकी तरफ़ अँगुली अुठाकर अुन मिलने आअी हुअी बहनोंसे गांधीजीने कहा—"आप अुसपर श्रद्धा रखिये। अुसीकी प्रार्थना कीजिये, और अुसीसे डरिये। दुनियामें दूसरे किसीकी प्रार्थना न कीजिये, न और किसीसे डरिये।"

यूरोपको सलाह

मो० रेमॉण्ड कार्टियर नामके अेक फ्रेंच अखबारनवीस आज शामको श्रीरामपुर आये और गांधीजीसे अुनकी झोंपड़ीमें मिले। अुनके कुछ सवालोंके जवाबमें गांधीजीने अुनसे कहा—"अगर यूरोपवाले हिंसाका रास्ता न छोड़ेंगे, तो वे जरूर ही मिट जायँगे।"

मो० रेमॉण्डने पूछा—"यूरोपके हम सभी लोग हिंसाकी गोदमें पले हैं। हमसे अहिंसक बननेकी अुम्मीद आप कैसे रख सकते हैं?"

अिसके जवाबमें गांधीजीने कहा कि अगर वे अिसी तरह हिंसाके रास्ते पर चलते रहे, तो अेक दिन आयेगा, जब दुनियामें अुनका नाम-निशान भी न रह जायगा। आखिर यूरोपमें हुआ क्या? हिटलरशाहीको मिटानेके लिअे सवाअी हिटलरशाहीसे काम लिया गया, लेकिन बुराअीके अिस चक्करका तो कोअी अन्त नहीं। यह अिसी तरह चलता रहेगा।

मो० रेमॉण्डने पूछा—"क्या नये ढंगकी किसी तालीमसे अिसका कोअी हल निकल सकता है?" अिसके जवाबमें गांधीजीने अुनसे कहा—"बेशक, नअी दुनियाकी रचनाके लिअे तालीम भी नये ढंगकी होनी चाहिये।" फिर आल्डू हक्स्लीका जिक्र करते हुअे अुन्होंने कहा—"आज यूरोपवालोंके दिमागमें नये ढंगके जो खयालात काम कर रहे हैं, मि० हक्स्ली अुनकी नुमाअिन्दगी करते हैं। मुमकिन है कि आज वहाँ अुनके जैसे लोगोंकी तादाद कम हो, फिर भी अगर यूरोपको खुदकुशीसे बचना है, तो अुसे अहिंसाके ढंगका कोअी-न-कोअी अिलाज अपनाना ही होगा।"

छोटे-छोटे राष्ट्र किस तरह बचें?

अिसपर मो० रेमॉण्डने गांधीजीसे पूछा—"अहिंसाके जरिये हिटलरशाहीका खात्मा किस तरह किया जा सकेगा?" जवाबमें गांधीजीने कहा—"यही तो वह चीज है, जो हम सबको खोज निकालनी है। वरना, अुसकी गैरमौजूदगीमें, अगर हिटलरके ढंगकी हिंसाको मिटानेके लिअे अुससे बढ़ी-चढ़ी हिंसाका ही सहारा लेना जरूरी हो, तो कहना होगा कि अिस तरीक़ेसे छोटे-छोटे राष्ट्र तो किसी तरह अुबर ही न सकेंगे। जब कोअी भी अेक राष्ट्र निजी तौर पर, अकेले दम, हिटलरशाहीसे या हिंसाकी मिली-जुली ताक़तोंसे दब जाने या हार जानेसे अिनकार करेगा, और अपनी अिज़्ज़त-आबरू खोकर नहीं, बल्कि अपनी जानको दाँव पर लगाकर अपनी जगह पर डटा रहेगा, तभी अुसके बचनेकी कोअी गुंजाअिश रहेगी। अिस तरह अकेली अहिंसा ही बचावकी अेक अैसी गारण्टी है, जो बड़े-से-बड़े संख्याबलके सामने भी टिक सकती है। अगर हम अपनेमें अितनी हिम्मत और अैसी प्रतीकार भावना पैदा न कर सके, तो प्रजातंत्र या जमहूरियतकी भी खैर नहीं।"

भागे हुअे बेआसरा लोगोंको सलाह

२१ दिसम्बर, १९४६के दिन गांधीजीने प्रार्थनाके बाद जो तक़रीर की थी, अुसका अेसोशियेटेड् प्रेसकी तरफ़से भेजा गया सही अहवाल नीचे दिया जाता है—

अपनी तक़रीर शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा—"दान देने और लेनेके बारेमें मैं बहुत ही सख़्त खयाल रखता हूँ। जिस तरह किसीका किसीको मुफ़्तमें कोअी चीज बतौर बख़्शिशके देना गलत है, अुसी तरह किसीका किसीसे कोअी चीज मुफ़्त ही बतौर बख़्शिशके लेना भी गलत है। हमारे देशमें अक्सर अधर्म धर्मका बाना पहनकर घूमता नजर आता है। कहा जाता है कि हिंदुस्तानमें धर्म के नामपर भीख माँगकर पेट भरनेवाले साधुओं और फ़क़ीरोंकी तादाद ५६ लाखकी है। अिनमें ज़्यादातर अैसे लोग हैं, जो किसी तरह अिस लायक़ नहीं माने जा सकते कि अुन्हें मुफ़्तमें खिलाया जाय। और तो और, रंज और ग़मसे भरे अिस देशमें छुआछूतके घिनौने रिवाजको भी धर्मका आधार दिया गया है।"

अिसके बाद अिसी सिलसिलेमें गांधीजीने आगे कहा—"जिनके घर-बारका ठिकाना नहीं है, अुन निराश्रितोंको राहत पहुँचाने और अुन्हें फिरसे ठिकाने लगाकर अपने-अपने गाँवोंमें बसानेका सवाल

www.vinoba.in

बहुत ही गंभीर बन गया है। सारे हिन्दुस्तानके लोग नोआखालीके मुसीबतज़दा लोगोंके लिअे रुपया-पैसा भेजकर और दूसरी कअी तरहकी चीजें मुफ़्तमें देकर अुनकी मदद करना चाहते हैं, और आज आसार यह नज़र आते हैं कि कहीं यहाँवाले आम लोगोंके दानपर खुश-खुशी अपना काम चलानेकी जहनियतके शिकार न बन जायँ। अिसलिअे आज जरूरत यह है कि दो बातोंकी सख़्त मुखालिफ़तकी जाय — अेक, लोगोंकी अुस जहनियतकी, जो यह मानकर सस्ता संतोष अनुभव करती है कि लोगोंको मुफ़्तमें चीजें देनेसे देनेवाले पुण्यके हक़दार बनते हैं, और दूसरे, अुस जहनियतकी, जो दूसरोंसे मुफ़्तमें मिलनेवाली चीजें लेकर अुनके भरोसे अपना काम चलाना पसंद करती है।

अिसके बाद दान देनेवाली पब्लिक संस्थाओंके अिस रुखकी, और भागे हुअे बे-आसरा लोगोंके साथ सरकारको कैसा रुख अख़्तियार करना चाहिये, अिसकी तुलना करते हुअे गांधीजीने समझाया कि अिसमें कोअी शक नहीं कि निराश्रितोंकी छावनियोंमें जो लोग अिकट्ठा हुअे हैं, वे वहाँ अपने किसी क़सूरकी वजहसे नहीं पहुँचे हैं। अुनमेंसे कअियोंके घर जला डाले गये हैं, जिससे अुनके पास रहने-बसनेका कोअी ठौर-ठिकाना ही नहीं रह गया है; दूसरे कुछ अैसे लोग भी हैं, जिनके घर या झोंपड़े तो सलामत हैं, मगर माल-मिल्कियत सब लुट चुकी है; तीसरे वे लोग हैं, जो खास-तौरपर महज अिस डरसे अपने घर-बार छोड़कर भाग गये हैं कि गाँवोंमें अुन्हें अपने जान-मालकी हिफ़ाजतका कोअी भरोसा नहीं रह गया था। अिसलिअे सरकारको चाहिये कि वह हर तरहके लोगोंकी भली-बुरी हालतका पूरा-पूरा विचार करके अुसके मुताबिक़ अुनका अिन्तज़ाम करे, और यह देखे कि लोग अपनी सलामतीका खयाल लेकर ही अपने घरों और गाँवोंको लौटें।

अिसलिअे जबतक गाँवोंमें लोगोंके जान-मालकी हिफ़ाजतके लिअे जरूरी हालत पैदा नहीं होती, तबतक हिजरती लोग अपने बाल-बच्चोंके साथ अपने-अपने गाँवों और घरोंमें न लौटें, तो अुस हालतमें सरकारके लिअे यह ठीक न होगा कि वह महज अिसलिअे अुनका राशन बन्द कर देनेका तरीक़ा अपनाये। अगर भागे हुअे लोगोंसे यह अुम्मीद रक्खी जाती है कि अुन्हें अपने-अपने घर पहुँच जाना चाहिये और वहाँ फिरसे बसनेकी कोशिश करते हुअे सब तरहकी आफ़त-मुसीबतका, और जरूरत पड़ने पर मौतका भी, सामना करना चाहिये, तो सवाल यह पैदा होता है कि फिर राज या सरकारकी जरूरत ही क्या रह जाती है? वह तो अेक अैसी अराजक हालत होगी, जो खुद लोगोंने सोच-समझकर क़ायम की होगी, और जिसमें हर आदमी बड़े-से-बड़े खतरेका सामना अपने ही बल-बूते कर सकेगा। लेकिन आज समाजकी हालत यह है कि समाज-सेवाके और दूसरे बहुतसे जरूरी काम सरकारी या राज-दरबारी संस्थाओंको ही चलाने पड़ते हैं।

लोगोंकी पूरी-पूरी हिफ़ाज़तका फ़र्ज़

अिसका मतलब यह हुआ कि लोगोंकी पूरी-पूरी हिफ़ाजतका अिन्तज़ाम करना ही होगा। अिसके लिअे अैसी हवा पैदा करनी होगी, जिसमें लोग फिरसे अमन-अमानके साथ अपना गुजर-बसर कर सकें। जबतक अैसी हवा पैदा न हो, तबतक राहतका अिन्तज़ाम चालू रहना चाहिये।

लेकिन दान देनेवाली पब्लिक संस्थाओंकी बात बिलकुल दूसरे ढंगकी है। मेरी यह साफ़ राय है कि किसी भी आदमीका सदाव्रतों या लंगरोंसे मिलनेवाली खैरात पर जीना बुरा है। जिन दिनों दक्खिनी अफ्रीकामें सत्याग्रहकी लड़ाअी चल रही थी, अुन दिनों वहाँ सत्याग्रहियोंके खर्चका अिन्तज़ाम करनेके लिअे खुले हाथों बड़ी-बड़ी रक़मोंके दान दिये गये थे। सत्याग्रहियोंके बाल-बच्चों और अुनके सहारे जीनेवाले दूसरे लोगोंको बसानेके लिअे ट्रान्सवालमें लॅालीके पास टॅाल्स्टॅाय फॅार्म क़ायम किया गया था, जहाँ वे सब लोग अपने-अपने गुजारेके लिअे अपने भरसक मेहनत-मजदूरी करते थे। अिसका नतीजा यह हुआ कि जब लड़ाअी खत्म हो गअी, तो सत्याग्रहका संचालन करनेवाली संस्था दानमें मिली हुअी बहुत बड़ी रक़म दाताओंको वापस लौटा सकी थी।

अिसी अुसूलके मुताबिक़ यहाँ काम करनेवाली खैराती संस्थाओंको भी चाहिये कि वे लोगोंको साफ़ लफ़्ज़ोंमें यह कह दें कि हरअेक आदमीको सच्ची मेहनत करके खाना चाहिये — जो बग़ैर मेहनत-मजदूरी किये अेक बार भी मुफ़्तका खाता है, वह अपनेको बे-अिज़्ज़त बनाता है। अगर हम मेहनत-मजदूरीसे जी चुराना छोड़ दें, और अचानक आये हुअे दिनोंके फेरका मुक़ाबला करना सीख लें, तो हम निडर बनने और अपने राष्ट्रीय या क़ौमी सदाचारको अूँचा अुठानेकी दिशामें बहुत आगे बढ़ सकें।

घर-बार छोड़कर भागे हुअे बे-आसरा लोगोंसे मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हूँ कि चाहे आप ग़रीब हों या अमीर, आप सबको चाहिये कि आप सरकारसे यह कह दें कि सुबह-शाम सरकारी लंगरोंसे खैरातके तौर पर खाना लेना आपकी अिनसानियतकी शानको जेब नहीं देता। क्या ग़रीब और क्या अमीर, किसीके पास आज कुछ रह नहीं गया है, अिसलिअे सभीको अनाज, कपड़े, रहनेकी जगह और डॅाक्टरी मददकी जरूरत है। अिसलिअे आप सबको हक़ है कि आप जिन्दगीकी अिन बुनियादी जरूरतोंका अिन्तजाम करनेके लिअे सरकारसे कहें। लेकिन अगर आपमेंसे अेक भी तन्दुरुस्त औरत, मर्द, लड़का या लड़की अपनी-अपनी ताक़तके मुताबिक़ मेहनत-मजदूरी किये बिना अिस तरहकी मदद लेगा, तो वह अेक तरहसे समाजकी चोरी ही करेगा; अिसलिअे आप सब सरकारसे यह कहिये कि वह आपको आपके लायक़ और समाजके काम आनेवाला कोअी काम-धन्धा दे।

२४ दिसम्बरकी प्रार्थनाके बादकी तक़रीरसे

अपनी तक़रीर शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा — "मेरे पास रोज रोज ये शिकायतें आती रहती हैं कि जिन लोगोंने दंगोंके दिनोंमें ज़्यादतियाँ की हैं, जुर्म किये हैं, वे आज भी आजादीके साथ घूम-फिर रहे हैं; यही वजह है कि लोगोंका डर दूर नहीं होता। अगर यह सच हो, तो भी मैं आपको सलाह दूँगा कि आप हिम्मतसे काम लेकर अपने-अपने घरोंको लौट जाअिये। कुछ लोगोंने मुझसे यह शिकायत भी की है कि सरकार अुन्हें अुनके घर बनानेके लिअे जो रक़म देना चाहती है, वह तो किसी क़िस्मका छप्पर बाँधनेके लिअे भी काफ़ी नहीं है। अिसके बारेमें मुझे यक़ीन है कि चूँकि सरकारने हिजरती लोगोंको वापस अुनके गाँवोंमें ले जाने और बसानेका फ़ैसला किया है, अिसलिअे वह अुन्हें जरूरी मदद दिये बिना न रहेगी।

स्वावलम्बन

"मैं खुद तो यह ज़्यादा पसन्द करूँगा कि अपनी मौजूदा मुश्किलोंका सामना करनेके लिअे हिजरती लोग खुद ही अपनी सूझ-बूझसे अपनी जरूरतका सामान पैदा कर लें। जो आदमी अपने लिअे किसी चीजकी भीख नहीं माँगता, और जो अपनी हिफ़ाजतके लिअे दूसरोंका मुँह नहीं ताकता, अुसके सामने मेरा सिर अदबके साथ झुक जाता है। अगर आपमेंसे कोअी अपनी हिफ़ाजतके लिअे मुझ पर भरोसा रखते हैं, तो समझिये कि वे अेक निकम्मी चीज पर भरोसा रख रहे हैं। आदमीकी सच्ची और कारगर हिफ़ाजत तो तभी होती है, जब वह अपने अन्दर मौजूद ताक़तका यानी

(पृष्ठ ४८८ पर)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१९ जनवरी १९४७

हिन्दुस्तानके पुतलीघर

अहमदाबादके मिल-मजदूर-संघके मंत्री श्री खण्डुभाअी देसाअीने सन् १९४०से १९४६ तकके लड़ाअीके दिनोंमें हिन्दुस्तानके कपड़े और सूतके अुद्योगकी हालतपर रोशनी डालनेवाला जो बयान तैयार किया है, वह जरूरी काट-छाँटके साथ अिसी अंकमें दूसरी जगह दिया गया है। श्री खण्डुभाअी कहते हैं कि अुनके दिये आँकड़ों पर कोअी अेतराज नहीं किया जा सकता। अगर अुनका यह दावा सच हो, तो अुनके अिन आँकड़ोंपरसे नीचे लिखे नतीजे निकलते हैं—

१. हिन्दुस्तानमें कपड़े और सूतकी मिलोंके अुद्योगका क़रीब-क़रीब सारा कार-वार सिर्फ़ डेढ़ सौ व्यापारी पेढ़ियोंके हाथमें है।

२. यह अुद्योग राष्ट्रके फ़ायदेको ध्यानमें रखकर नहीं चलाया गया है।

३. अिस बीच हिन्दुस्तानका राज-काज चलानेवाली सरकारके साथ मिलकर मिलोंके अेजण्टों यानी मिल-मालिकों ने अपना कार-वार अिस तरह चलाया, कि अुसकी वजहसे देशमें कपड़ेका काल पड़ा, काले बाज़ार चले, अुनको मिलोंमें तैयार होनेवाले मालकी क़ीमत अुसकी लागत क़ीमतके मुक़ाबले बेहद ऊँची रही, ग़ैरवाजिब तरीक़ेसे बढ़ाअी गअी अिस क़ीमतसे कपासकी खेती करनेवाले किसानोंको और खुद अुन्हींके कारखानोंमें काम करनेवाले मजदूरों व दूसरे लोगोंको अपनी पैदावार व मजदूरी वग़ैराका पूरा-पूरा मुआवज़ा न मिला, और देशकी आम रिआयाको चूसकर या लूटकर मिल-मालिकों ने अेक अरब रुपयेका नफ़ा कमाया और वे मालामाल हो गये।

४. फिर, ये मिल-अेजण्ट अपने काममें अनगढ़ या अ-कुशल हैं।

५. अिसलिअे राष्ट्रकी पूँजी और मिल्कियतके ट्रस्टीके नाते वे अिस अुद्योगका कार-वार चलानेमें नालायक़ साबित हुअे हैं।

६. ट्रस्टीके नाते अपने अिस नैतिक अपराधके सिवा, अिस अुद्योगमें पूँजी लगानेवाले लोगोंको अिस बीच नफ़ेकी शकलमें अपनी कुल लागत-पूँजीके मुक़ाबले कहीं ज़्यादा मुआवज़ा मिल चुका है, चुनाँचे अगर राष्ट्र अिस अुद्योगको अपने हाथमें लेनेका फ़ैसला करे, तो अपने अिस अधिकार पर अमल करते समय अिस अुद्योगमें लगाअी गअी पूँजी या अिसके हाथों राष्ट्रकी जो सेवा हुअी है, अुसके बदलेमें अुसे कोअी मुआवज़ा देनेका फ़र्ज़ राष्ट्रके सिर नहीं रहता।

खुद श्री देसाअी ने भी साफ़ शब्दोंमें यह आखिरी नतीजा निकाला है, लेकिन अिस बयानको तैयार करते समय अुनकी मन्शा यह न थी कि वे राष्ट्रको अैसा कोअी क़दम अुठानेके लिअे मजबूर करें। शायद अुनका यह खयाल हो कि आज अिस तरहका कोअी क़दम अुठानेके लिअे राष्ट्र तैयार नहीं है। 'राष्ट्रीकरण'को —यानी बड़े-बड़े अुद्योगोंका, और माल-असबाब व लोगोंको अेक जगहसे दूसरी जगह लाने-ले-जानेके जरियोंका, सारा अिन्तज़ाम राजके अपने हाथमें ले लेनेको — अेक अुसूली आदर्शकी शकलमें पेश करना बहुत आसान है, लेकिन जब सरकारको अिस आदर्श पर अमल करनेकी बात सोचनी पड़ जाय, तब बहुत मुमकिन है कि वह अपनेको अैसी जिम्मेदारीके लिअे पूरी तरह तैयार न पाये। यहाँ यह बात समझने लायक़ है कि अलग-अलग स्थापित हितोंको अिस बातका पता रहता है कि आम तौरपर सरकारें अिस कामके लिअे तैयार नहीं होतीं; नतीजा यह होता है कि अुन सबका लोभ और स्वार्थ पुष्ट होता रहता है, और फिर अपने मतलबको पूरा करनेमें वे कोअी दिक़्क़त या रुकावट महसूस नहीं करते।

श्री खण्डुभाअी देसाअी खुद धारासभाके अेक मेम्बर हैं। अिसलिअे सहज ही अुन्होंने सिर्फ़ क़ानूनी अिलाज सुझाये हैं। मसलन्, अुन्होंने यह तजवीज पेश की है कि "सिर्फ़ खरीदारोंके हितका खयाल रखकर कपड़ेकी पैदावार और अुसके बँटवारे पर अंकुश रखनेवाला अेक 'टेक्स्टाअिल कण्ट्रोल अेण्ड सप्लाय कमीशन' मुक़र्रर किया जाय, और "क़ानून तोड़ने पर क़ैदके साथ दूसरी बहुत कड़ी सजायें" दी जायँ।

अगर राज-काज चलाने और क़ानून बनानेवाले लोग खुद जितना-कुछ कर सकें, सो सब करें, तो अिसमें किसीको कोअी अेतराज नहीं हो सकता। लेकिन क़ानूनों और क़ायदोंके अमल पर जरूरतसे ज़्यादा भरोसा रखने और यह समझकर चलनेमें लोग बड़ी गलती करेंगे कि खुले बाज़ारसे अपनी जरूरतका कपड़ा पानेके लिअे साफ़ लफ़्ज़ोंमें अेक कड़ा क़ानूनभर बनवा लेना काफ़ी होगा। मेरे खयालमें आज हालत यह है कि अगर सरकार सिविल सर्विसके अेक महकमेके जरिये मिलोंका सारा कार-वार खुद चलाने लगे, तो भी अुसकी वजहसे कपड़ेके मामलेमें अुन लोगोंको कोअी खास राहत नहीं मिलेगी, जिन्हें दर असल अुसकी ज़्यादा-से-ज़्यादा और सच्ची जरूरत है। अिसका अेक ही मुनासिब अिलाज है, और वह है — स्वावलम्बन। अगर सचमुच ही लोग यह चाहते हैं कि अुन्हें ज़्यादा कपड़ा मिले, या कपड़ेके अुद्योगका राष्ट्रीकरण किया जाय, तो अुन्हें चाहिये कि वे मिलके कपड़ेका अिस्तेमाल करना छोड़ दें, अपने-अपने घरोंमें अेक-अेक तकुअेवाली मिल खड़ी कर लें और अपने गाँव या क़स्बेमें बुनाअीके धन्धेको संगठित करके अुसे मजबूत बुनियाद पर खड़ा कर दें। हाथ-करघोंपर कपड़ा बुननेवाले बुनकरों और जुलाहोंको भी चाहिये कि वे गहरे पैठकर दूरन्देशीके साथ अिस मसले पर गौर करें। अगर वे चाहते हैं कि अुनका धन्धा बारहों महीने, बिला नागा चले, और अुन्हें अपने धन्धेके सिलसिलेमें किसीकी खुशामद न करनी पड़े, किसीको रिश्वत न देनी पड़े, तो अुन्हें चाहिये कि वे न सिर्फ़ मिलके सूतका भरोसा न रक्खें, बल्कि अुसे हमेशाके लिअे छोड़ दें। क्योंकि जिन दलीलोंसे मिलोंमें कतनेवाले सूतकी हिमायत की जाती है, वे सभी दलीलें मिलोंकी बुनाअीपर भी लागू होती हैं। जुलाहे अिस बातको न भूलें कि जिस तरह आज घरकी हाथ-कताअीको पुराने जमानेकी अेक निकम्मी निशानी कहकर ठुकरानेकी बात कही जाती है, अुसी तरह अेक दिन आयेगा, जब यही बात हाथ-बुनाअीके लिअे भी कही जायगी। जहाँ अेक जगह बड़े-बड़े पुतलीघर खड़े करके कपड़ा बनाया जाता है, वहाँ क्या कत्तिनें और क्या जुलाहे, दोनों, पुतली-घरोंमें मजदूरी ही कर सकते हैं — वे आजाद कारीगर नहीं रह सकते, फिर भले ये पुतलीघर कुछ पूँजीपतियोंके हाथमें हों, या अिनपर सरकारका क़ब्जा हो। जो समझदार जुलाहा आज मिलका सूत बुनकर काले बाज़ारके जरिये होनेवाले नफ़ेको छोड़ देगा, और हाथ-कता सूत बुननेका आग्रह रक्खेगा, सच है कि अुसके संगी-साथी आज अुसे दीवाना कहकर अुसका मज़ाक अुड़ायेंगे, लेकिन जल्दी ही अिन मज़ाक अुड़ानेवाले 'दुनियादार' लोगोंको पता चल जायगा कि सच्चा हिसाब तो अिस 'दीवाने'ने ही लगाया था।

साबरमती, ५-१-'४७ किशोरलाल घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

मूल्य डाकखर्च

रचनात्मक कार्यक्रम — अुसका रहस्य और स्थान (नअी और सुधरी हुअी आवृत्ति) (गांधीजी) ०-६-० ०-१-०

मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी) १-४-० ०-५-०

हमारी आ — अुनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर) २-०-० ०-६-०

www.vinoba.in

हिन्दुस्तानका वस्त्र-व्यवसाय

(सन् १९४०से १९४६ तक)

नीचे मैं जिन हक़ीक़तों और आँकड़ोंकी चर्चा करना चाहता हूँ, उन्हें आगे आनेवाली पीढ़ियाँ अेक तरफ़ स्थापित हितों और दूसरी तरफ़ आम लोगोंके आपसी सम्बन्धोंके अितिहासका अेक काला अध्याय मानेंगी।

अुद्योगका माली ढाँचा

देशकी कपड़ेकी मिलोंके समूचे अुद्योगमें चुकाअी हुअी पूँजीकी शकलमें क़रीब ५० करोड़ रुपये लगे हुअे हैं, और अिसके हिस्सेदारोंने अितनी ही जोखिम अपने सिर ली है। यह बात ग़ौर करने लायक़ है कि अिस चुकाअी हुअी पूँजीका ज़्यादातर हिस्सा देशकी क़रीब १५० मैनेजिंग अेजण्टोंकी फर्मों या पेढ़ियोंके हाथमें है, और अिस तरह ये डेढ़ सौ मिल-मालिक ही देशके अिस ज़बरदस्त अुद्योगके मालिक हैं। वे ही अिसपर क़ाबू रखते हैं, और अिस अुद्योगकी पैदावारका अिस्तेमाल करनेवाले करोड़ों लोगोंके हितकी ज़रा भी परवाह किये बिना अपना निजी मतलब गाँठनेमें अुससे बेजा फ़ायदा अुठाते हैं।

अिस अुद्योगके पास मकान, ज़मीन और मशीनोंकी शकलमें क़रीब १०० करोड़ या अेक अरब रुपयोंकी क़ायम पूँजी है। यहाँ अिस बातका ख़याल रखना चाहिये कि अिस क़ीमतका कुछ हिस्सा, ख़ासकर बम्बअीमें, पहली बड़ी लड़ाअीके वक़्त फिरसे आँका जाकर बनावटी तरीक़ेसे बढ़ाया गया है। अिस अुद्योगमें क़रीब २ लाख करघे और १ करोड़ तकुअे हैं। पिछली लड़ाअीके पहले अिसमें चार अरब बीस करोड़ गज़ कपड़ा तैयार होता था, और क़रीब पाँच लाख मज़दूर अिस काममें लगे हुअे थे। लड़ाअी शुरू होनेके बाद रातपाली शुरू होनेकी वजहसे अिसमें काम करनेवाले मज़दूरोंकी तादाद बढ़कर ७ लाख हो गअी। मगर अुसी हिसाबसे मालकी पैदावारमें बढ़ती नहीं हुअी। रातपालीका काम बढ़ जानेपर भी मालकी पैदावारका न बढ़ना ज़रा अजीब-सा मालूम होता है। मगर अिस अुद्योगसे नज़दीकका ताल्लुक़ रखनेवाले देख सकते हैं कि चूँकि मिल-मालिकोंने सरकारकी मददसे अपने लिअे ख़ासा अच्छा मुनाफ़ा कर लिया है, अिसलिअे वे लापरवाह, अ-कुशल और सुस्त बन गये हैं।

लड़ाअीके ज़मानेका मुनाफ़ा

मिल-मज़दूरोंसे सम्बन्ध रखनेवाले अपने कामके सिलसिलेमें अिस अुद्योगके क़रीब तीन-चौथाअी हिस्सेके 'बैलेन्स शीटों' या आँकड़ोंपर ग़ौर करनेका मुझे मौक़ा मिला है।

देशके अिस पूरे अुद्योगका लड़ाअीसे पहलेका कुल नफ़ा क़रीब पाँचसे छह करोड़ रुपयेका था। कपड़ा, सूत वग़ैरा तैयार मालकी क़ीमत क़रीब ६० करोड़ रुपये थी। अिसमें मालका बँटवारा करनेवाले बीचके व्यापारियों और आढ़तियोंके मुनाफ़ेकी २० फ़ी सैकड़ा रक़म और जोड़ देनेपर कपड़ेका अिस्तेमाल करनेवाले लोगोंको यह कपड़ा और सूत ७२ करोड़ रुपयोंमें पड़ा था। कुछ कपड़ा देशसे बाहर भी भेजा गया था, मगर वह अितना थोड़ा था कि आम नतीजे पर पहुँचनेके लिअे हम अुसे छोड़ भी दें, तो कोअी हर्ज नहीं।

जनवरी सन् १९४१के बादसे कपड़ेकी क़ीमतें बढ़ने लगीं। सन् १९४२के अक्तूबर, नवम्बर और दिसम्बरमें क़ीमतें यकायक बहुत ही ऊँची चढ़ गअीं, और १९४३के मअी महीनेमें तो वे आख़िरी छोरपर जा पहुँचीं। अिस वक़्त कपड़ेकी क़ीमत लड़ाअीके पहलेकी क़ीमतसे साढ़े पाँच गुनी बढ़ गअी। अिसी बीच काले बाज़ार शुरू हो चुके थे, अिसलिअे आम लोगोंको तो अिन दामों भी कपड़ा नहीं मिलता था, और अुन्हें अूपर दिये गये दामोंसे ५० या १०० फ़ी सैकड़ा ज़्यादा दाम देकर माल ख़रीदना पड़ता था। बादमें सन् १९४३के बीचके महीनोंमें सरकारने आम लोगोंके फ़ायदेके लिअे ख़ुद दख़ल देनेकी कोशिश की, मगर अिसके लिअे अुसने जो कार्रवाअी की, वह अितनी मामूली थी कि अुससे जनताको कोअी फ़ायदा न हुआ, अुलटे काले बाज़ार और भी बढ़ गये, और मिल-मालिकोंके हाथों होनेवाले जनताके शोषणको न सिर्फ़ जायज़ और अधिकारपूर्ण ठहराया गया, बल्कि अुसे बढ़ावा दिया गया, और अुसपर प्रामाणिक धन्धेकी मुहर लगा दी गअी। अिसके लिअे 'क्लॉथ-कण्ट्रोल-बोर्ड' के नामसे जो कमेटी क़ायम की गअी थी, अुससे ज़्यादा अच्छी अुम्मीद कोअी कर भी न सकता था; क्योंकि अिस बोर्डमें अुन्हीं मिल-मालिकोंका बोल-बाला था, जिनसे जनता अपनी हिफ़ाज़त चाहती थी। जनता पर डाली हुअी अिस मोहिनीका नतीजा नीचे दिये हुअे आँकड़ोंसे मालूम हो जायगा।

हिन्दुस्तानका वस्त्र-व्यवसाय

(लड़ाअीके ज़मानेका मुनाफ़ा—करोड़में)

साल	कुल नफ़ा	अेजण्टोंका कमीशन	मालकी क़ीमत (अेक्स-मिल)	गाहकोंकी चुकाअी हुअी क़ीमत
लड़ाअीसे पहलेके सालोंमें				
१९३८	५	१	६०	७२
१९३९	५	१	६०	७२
लड़ाअीके ज़मानेमें				
१९४०	७	१	७०	८४
१९४१	२३	३	१००	१२०
१९४२	४६	५	१५०	२५०
१९४३	१०९	१०	२७०	४८०
१९४४	८५	९	२१०	३७०
१९४५	६१	७	१८०	३२४
१९४६ (अन्दाज़न)	४१	५	१७०	३०६
जोड़	३७२	४०	११५०	१९३४

यह बात सभी जानते हैं कि टैक्सोंके ज़रिये सरकारने अिसमेंसे करोड़ों रुपये लिये हैं, और अिस टैक्सकी वसूलीके लिअे मिल-मालिकोंने सरकारके आढ़तियोंका काम किया है। लड़ाअीके दरमियान अिस टैक्सने कपड़ेका अिस्तेमाल करनेवाले हरअेक मर्द, औरत और बच्चेके लिअे जज़ियाकी शकल अख़्तियार कर ली थी। अूपरके आँकड़ोंसे यह देखा जा सकता है कि लड़ाअी शुरू होनेसे पहले जहाँ लोग हर साल फ़ी आदमी रु० २-१२-० देते थे, वहाँ लड़ाअीके सालोंमें अुन्हें रु० ६-१२-० देने पड़े। यहाँ यह बतला देना ज़रूरी है कि स्थापित हितों और सरकारी तिजोरीके स्वार्थका ख़याल करके ही अिस देशमें जान-बूझकर कपड़ेकी क़ीमतें अिस हद तक बढ़ने दी गअीं; जबकि अिंग्लैण्ड, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया या कनाडा वग़ैरा देशोंके लड़ाअीमें सीधी तरह शामिल होनेपर भी वहाँ कपड़ेकी क़ीमतें ३०फ़ीसदीसे ज़्यादा नहीं बढ़ने पाअीं। लड़ाअीसे पहलेके सालोंमें मिलोंमें तैयार हुअे मालकी मामूली 'अेक्स-मिल' क़ीमत सिर्फ़ ६० करोड़ रुपये थी; जब कि अिन सात सालोंमें वही औसतन् १६४ करोड़ रुपये हो गअी है। यहाँ यह बात ख़ास तौरपर ग़ौर करने लायक़ है कि लड़ाअीके पहले तो गाहक अिस क़ीमत पर कपड़ा पा भी जाता था, मगर यहाँ काला बाज़ार शुरू हो जानेकी वजहसे लड़ाअीके दिनोंमें और अुसके बाद अपना कपड़ा ख़रीदनेके लिअे अुसे कम-से-कम ५० फ़ी सैकड़ा ज़्यादा दाम चुकाने पड़ते हैं। क्या शहरोंमें और क्या गाँवोंमें, सरकार द्वारा ठहराअी गअी क़ीमत पर कपड़ा पा जाना मामूली गाहकके लिअे नामुमकिन है। अिसीलिअे सन् १९४२के बाद की क़ीमत मैंने बढ़ाकर लिखी है, क्योंकि अिस साल से काला बाज़ार बड़े पैमानेपर शुरू हो गये थे, जिनकी वजहसे गाहकों को यह क़ीमत चुकानी पड़ती थी। अगर हम अूपर दिये गये मुनाफ़े के आँकड़ों-को मिलाकर देखें, तो हमें दंग रह जाना पड़े। अिस अुद्योग

www.vinoba.in

में सिर्फ़ ५० करोड़ रुपयों की पूँजी लगी है, और जिसकी क़ायम पूँजी १०० करोड़ रुपयों से ज़्यादा नहीं है, और लड़ाअी से पहले जिसकी पैदावार की सालाना क़ीमत सिर्फ़ ६० करोड़ रुपये थी, अुसे अेक ही साल में १४९ करोड़ रुपयोंका और सात सालके दरमियान औसतन् ५३ करोड़ रुपये सालानाका मुनाफ़ा अुठाने दिया गया। अिस तरह सिर्फ़ अेक सालका औसत मुनाफ़ा लड़ाअीसे पहलेकी सालाना पैदावारकी क़ीमतके ७५ फ़ीसदीसे भी ज़्यादा हुआ। सन् १९४२ से १९४५ के दरमियान अिस अुद्योगका सालाना औसत मुनाफ़ा क़रीब-क़रीब अुसकी क़ायम पूँजीके बराबर ही था। यानी अिन तीन बरसोंमें मिल मालिकोंने आमलोगोंसे सिर्फ़ मुनाफ़ेकी शकलमें अपने कारख़ानोंकी अड़ाअी गुनी क़ीमत वसूल कर ली—यानी कपड़ेकी माँग पूरी करनेके लिअे खड़े किये गये कारख़ानोंकी क़ीमतसे कअी गुनी ज़्यादा रक़म देशके ४० करोड़ गाहक लड़ाअीके अिन दिनोंमें अुन्हें दे चुके हैं। अिसलिअे न्यायकी, नीतिकी और आर्थिक दृष्टिसे भी अब यह अुद्योग देशकी मिल्कियत माना जा सकता है। और, वाजिब तौर पर देखा जाय, तो अब किसी भी क़िस्मका हरजाना या मुआवज़ा लिये बिना यह अुद्योग राजके सिपुर्द कर दिया जाना चाहिये। क्योंकि ४२० मिलोंकी कुल क़ीमतसे कहीं ज़्यादा रक़म देनेके लिअे आमजनताको मजबूर किया गया है। अगर मैनेजिंग अेजण्टोंको मिलनेवाले कमीशन पर अेक सरसरी नज़र डाली जाय, तो पता चलेगा कि अुन्होंने जो रक़म ली है, वह पूरे अुद्योगके मामूली मुनाफ़ेसे बहुत ज़्यादा है। मिल-अुद्योगकी जो सेवा वे करते कहे जाते हैं, और अुसके लिअे मामूली वक़्तमें अुनको जो कमीशन दिया जाता था, अुससे अिस लड़ाअीके दिनोंमें दी हुअी कमीशनकी रक़म दस गुनी ज़्यादा होती है। किसी भी तरीक़ेसे देखने पर मालूम होगा कि अपना अेक क़िस्मका गुट बना लेनेवाली अिन १५० फर्मोंने अपने करोड़ों गाहकोंको नुक़सानमें रखकर, यानी देशको नुक़सान पहुँचाकर, ख़ुद फ़ायदा अुठाया है। कोअी भी सुधरी हुअी सरकार आम-जनताका अैसा खुला शोषण नहीं होने देगी। तिसपर हिन्दुस्तान-जैसे ग़रीब मुल्कमें होनेवाला यह शोषण तो हर तरह बुरा और बेरहमीसे भरा है।

छिपे हुअे मुनाफ़े

अूपर जिन मुनाफ़ोंका ज़िक्र और छान-बीनकी गअी है, वे बैलेन्स शीटमें बताये हुअे मुनाफ़े हैं। यहाँ हमें यह भूलना न चाहिये कि पिछले सात बरसमें क़रीब-क़रीब सभी मिलोंने कपड़ेका और करोड़ोंकी क़ीमतकी दूसरी चीज़ोंका गुप्त संग्रह किया है, और अुसे जनतासे छिपाकर रखा है। मैनेजिंग अेजण्ट, अुनके दोस्त और साथियोंने कच्चा माल व मिलके लिअे ज़रूरी सामान वग़ैरा ख़रीदनेमें और मिलका बना कपड़ा व सूत वग़ैरा बेचनेमें जो बेजा और पोशीदा नफ़ा कमाया है, वह अुस नफ़ेके अलावा है, जिसका ज़िक्र अूपर किया जा चुका है। अगर अिसका हिसाब लगाया जाय, तो बेजा मुनाफ़ेकी यह रक़म करोड़ोंकी निकले। मगर अिसका कोअी हिसाब-किताब न कभी रखा गया है, और न कभी रखा जायगा।

गाहकों और कपास पैदा करनेवालोंके हितोंकी क़ुरबानी

अपने निजी मुनाफ़ेके लिअे मिल-मालिकोंका यह गुट कपास पैदा करनेवाले किसानोंके पेट पर पाँव रखनेमें भी नहीं हिचकिचाया। हाकिमोंके साथ अुनके ताल्लुक़ात अितने गहरे और अुनपर अुनका असर अितना भारी था कि अपने मुनाफ़ेकी मात्रा बढ़ानेके लिअे अुन्होंने कपासकी, यानी अपनी ज़रूरतके ख़ास कच्चे मालकी क़ीमतें जितनी अुनसे बन सकीं अुतनी कम रखवाअीं। अिसकी वजहसे क़ुदरतन् ही अुन्होंने कपास पैदा करनेवालोंको नुक़सान पहुँचाकर अपने नफ़ेका हिस्सा और भी बढ़ा लिया। बेचारे ग़रीब किसानोंको, जो कपड़ोंके ख़रीदार भी हैं, दुतरफ़ा मार सहनी पड़ी। अेक तरफ़ अुन्हें अपनी ज़रूरतका कपड़ा बहुत अूँचे दामों ख़रीदना पड़ा और, अिसके मुक़ाबले दूसरी तरफ़ अुन्हें अपनी ख़ास पैदावार कपासके दाम कम मिले। लड़ाअीसे पहलेके सालमें कपासकी क़ीमतका जो अिण्डेक्स १०० था, मुक़ाबले लड़ाअीके दिनोंमें वही बढ़कर २१७ हो गया था, जब कि लड़ाअीसे पहलेके सालमें कपड़ेकी क़ीमतका जो अिण्डेक्स १०० था, वह लड़ाअीके दिनोंमें २७३ हो गया था। यहाँ मुझे यह बतला देना चाहिये कि कपास पैदा करनेवालोंके लगातार आन्दोलन करते रहनेसे अभी पिछले सालसे ही कपासकी क़ीमतें कुछ अूँची चढ़ती मालूम होती हैं। अगर यह न हुआ होता, तो कपास और कपड़ेकी क़ीमतके अिण्डेक्सका फ़र्क़ अिससे भी ज़्यादा खटकनेवाला होता। बम्बअीमें लोगोंके गुज़ारेके ख़र्चका जो अिण्डेक्स बनाया गया है, अुससे भी पता चलता है कि रोज़मर्राके कामकी दूसरी चीज़ोंके दामोंके मुक़ाबले कपड़ेकी क़ीमत बहुत ज़्यादा है। यह अिण्डेक्स तैयार करनेमें रोज़मर्राके काममें आनेवाली सभी चीज़ें शामिल कर ली गअी थीं। लड़ाअीसे पहलेके सालमें अिसे १०० मानें, तो लड़ाअीके दिनोंमें यह १८१ हो गया था। अगर अिसमें कपड़ा शामिल न किया जाता, तो यह आँकड़ा अिससे भी कम होता।

लड़ाअीके दिनोंमें हुअे मुनाफ़ेमें व्यापारियोंका हिस्सा

देशमें कपड़ेके थोक व्यापारियोंने जो मुनाफ़ा कमाया, अुसका क़िस्सा भी मज़ेदार है। सारे मुल्कमें अिस क़िस्मके व्यापारियोंकी तादाद ४००से ज़्यादा नहीं है। सरकार और मिल-मालिक दोनोंने, अुन्हें अपने विश्वासमें लिया था, और अपनी सामूहिक लूटमें अुन्हें मुनासिब हिस्सा दिया था। मौजूदा 'क्लॉथ-कण्ट्रोल-बोर्ड'में, मिल-मालिकों, और कपड़ेके थोक व्यापारियोंके अलावा कुछ अिनेगिने लोग अैसे भी हैं, जिनके बारेमें कहा यह जाता है कि कपड़ेके अुद्योगमें अुनका कोअी स्वार्थ नहीं। अेक तो अैसे लोगोंकी तादाद बहुत थोड़ी है, तिसपर अगर कभी वे कोअी आवाज़ अुठाते भी हैं, तो ये करोड़पति अुनका मुँह बन्द करनेके लिअे अपने ख़ास तरीक़े काममें लाते हैं। कपड़ेका बँटवारा करके समाजकी सेवा करनेवाले कपड़ेके थोक व्यापारीको कपड़े और सूतकी बिक्रीकी क़ीमतपर औसतन् १ फ़ीसदी कमीशन मिलता था। यह कमीशन या दलाली अहमदाबादमें ½%, बम्बअीमें १½% और दूसरे केन्द्रोंमें ½% से १½% तक थी। अिसलिअे मैंने अपने कामके लिअे १ फ़ीसदीका वाजिब औसत लिया है। कपड़ेके थोक व्यापारियोंको ६० करोड़ रुपयोंकी कुल बिक्री पर क़रीब ६० लाख रुपये देकर अुनकी सेवाका बदला चुकाया जाता था। 'क्लॉथ-कण्ट्रोल-बोर्ड'ने अपनी ज़बरदस्त होशियारी दिखलाते हुअे अिस दलालीको बढ़ाकर बिक्रीकी कुल क़ीमत पर ३ फ़ीसदी कर दिया। अिस तरह अिन दलालोंकी दलाली तिगुनी हो गअी, मगर कपड़ेकी बढ़ी हुअी क़ीमतोंका ख़याल करें, तो पता चलेगा कि सन् १९४४में अिन व्यापारियोंको ६० लाख रुपयोंके बदले ६ करोड़ रुपये मिले। यह रक़म, मामूली वक़्तमें अुन्हें मिलनेवाली रक़मसे दस गुनी ज़्यादा है। यहाँ हमें अिस बातका भी ख़याल रखना चाहिये कि अिसमें थोक व्यापारीको न तो कोअी जोख़िम अुठाना पड़ता था, न पूँजी लगानी पड़ती थी, और न किसीकी कोअी सेवा ही करनी पड़ती थी। लड़ाअीसे पहलेके दिनोंमें समूचे मिल-अुद्योगके मुनाफ़ेकी बराबरी करनेवाली ६ करोड़की यह ज़बरदस्त रक़म सिर्फ़ अुनका मुँह बन्द करनेके लिअे अुन्हें दी जाती थी। क्योंकि कपड़ेकी पैदावार और अुसके बँटवारेके क़रीब-क़रीब पूरे सवालको आपसी समझौतेसे हल करनेवाले मिल-मालिकों और सरकारके अेजण्टोंके काले कारनामोंको देशमें दूसरे किसीकी बनिस्बत वे व्यापारी ही ज़्यादा जानते हैं। क्लॉथ-कण्ट्रोल महकमेमें, यानी कपड़ेके बँटवारे और अुसकी क़ीमतोंका नियमन करनेवाले महकमे में, हज़ारों नौकर हैं, और अुन्हें बड़ी-बड़ी तनख़्वाहें मिलती

www.vinoba.in

हैं। अिसके सिवा, ग़ैरक़ानूनी तौरपर, रिश्वत वग़ैराकी शकलमें, अुन्हें जो कुछ मिलता है, सो अलग ही है — क्योंकि आज यह बात किसीसे छिपी नहीं है। अगर क्लॉथ-कण्ट्रोलके अिस कामकी गहराअीके साथ जाँच की जाय, तो जाँच करनेवालेको अिस बातका पूरा यक़ीन हो जाय, कि सरकारकी हुकूमत और शानकी आड़में आमलोगोंको ठगनेकी यह अेक सुसंयोजित और सोच-समझकर की गअी धोखेबाज़ी ही थी। मेरी राय है कि यह धोखेबाज़ी अब अेक दिनको भी न चलनी चाहिये, और यह सारा महकमा ही फ़ौरन बन्द कर दिया जाना चाहिये।

आजकी तंगीके लिअे मिल-अुद्योगका स्वार्थ ज़िम्मेदार है

जनवरी, १९४४में छपे अपने अेक बयानमें मैंने यह कहा था कि आम लोगोंकी मौजूदा माली तंगी और मुसीबतोंके लिअे खास तौर पर कपड़ेका अुद्योग ज़िम्मेदार है। पहले अिस अुद्योगने ही क़ीमतें बढ़ानी शुरू कीं, और क़ुदरतन् दूसरी चीज़ों पर भी अुसका असर पड़ा। अगस्त, सन् १९४२के बाद चीज़ोंकी क़ीमतोंके रुख़ पर ग़ौर किया जाय, तो मालूम होगा कि पहले कपड़ेकी क़ीमतें बढ़ने लगीं, और अुसके कुछ महीनों बाद दूसरी चीज़ोंके भाव बढ़े। अिस तरह ज़ाहिर है कि कपड़ेके अुद्योगसे जो अनर्थ-परम्परा शुरू हुअी, अुसने देशकी माली हालतके तौलको अुलटनेमें खासा हिस्सा लिया है। अगर काग़ज़ी सिक्कोंके प्रसार या फैलावके आँकड़ोंपर भी ग़ौर किया जाय, तो पता चलेगा कि सिक्कोंका यह प्रसार भी सन् १९४१ से कपड़ेकी बढ़ती हुअी क़ीमतके साथ ही साथ बढ़ता गया है। और, जब सन् १९४२ के आख़िरी ६ महीनोंमें और १९४३ के पहले ६ महीनोंमें कपड़ेकी क़ीमतें अेकदम बढ़ गअीं, तो अुन्हीं दिनों सिक्कोंका प्रसार भी बेहद बढ़ गया। मगर सिक्कोंका अितना फैलाव हो जानेपर भी दूसरी चीज़ोंके, और ख़ासकरके कपास व अनाज के भाव अुसी हिसाबसे नहीं बढ़ पाये। अिसलिअे हम अिस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि कपड़ेके अुद्योगमें दिलचस्पी रखनेवालोंने अपना मतलब साधनेके लिअे सारी अर्थ-व्यवस्थाको कुछ अैसा घुमाव दे दिया, जिससे देशके दूसरे तबक़ेके लोगोंको नुक़सान पहुँचाकर भी वे फ़ायदेमें रह सकें।

मुझे लगता है कि आज मुल्कमें जो काले बाज़ार, रिश्वतख़ोरीकी बुराअी और पैसेकी तंगी पाअी जाती है, वह बहुत हद तक कपड़ेकी मिलोंके अुद्योगसे ताल्लुक़ रखनेवाले मिल-मालिकों, कपड़ेके व्यापारियों और मिलोंके लिअे कच्चा और दूसरी तरहका ज़रूरी माल मुहैया करनेवाले सौदागरोंके हाथमें ग़ैरमामूली तौर पर मनमाना रुपया आ जानेकी वजहसे है। और, यह कहने के लिअे हमारे पास कारण भी मौजूद हैं। ख़ुराकके बाद अिनसानकी दूसरी खास ज़रूरत कपड़ेकी है। अिसे ध्यानमें रखकर अुस वक़्तकी सरकारने, आम लोगोंके हितकी परवाह किये बिना, कपड़ेके ख़ुदग़रज़ कारख़ानादारोंकी मददसे, अिन ज़रूरतोंका बेजा फ़ायदा अुठाया। अिसलिअे आम लोगोंके फ़ायदेके ख़यालसे जबतक अिस अुद्योगका पूरी तरह और पुरअसर तरीक़ेसे नियमन नहीं किया जाता, तबतक ज़ाहिर है कि फिरसे मामूली हालत पैदा करनेके लिअे दूसरी दिशाओंमेंकी गअी हमारी सारी कोशिशें नाकाम साबित होंगी, और जिन नतीजों तक हम सब पहुँचना चाहते हैं, अुन तक पहुँच न सकेंगे।

मज़दूरोंके हितोंकी भी क़ुरबानी की गअी

अूपर यह बतलाया जा चुका है कि मिल-मालिकोंने अपना मतलब गाँठनेके लिअे आम लोगोंके हितको जान-बूझकर नुक़सान पहुँचाया है। अब हम ज़रा यह देखें कि अुन्होंने अपने मज़दूरोंके साथ भी वाजिब और अिन्साफ़का बरताव किया है या नहीं। अिस अुद्योगमें काम करनेवाले मज़दूरोंके साथ भी बेजा बरताव हुआ है, और ख़ानगी हितोंकी वेदी पर अुनके हितोंका भी ख़ून किया गया है। मामूली तौर पर अुन्हें अितना मेहनताना नहीं दिया गया, जिससे वे महँगाअीका पूरी तरह सामना कर सकें। बढ़ी हुअी क़ीमतोंकी भरपाअी के तौर पर अुनको दिया जानेवाला महँगाअी-भत्ता ५० से ७५ फ़ीसदी तक ही दिया गया है। सिर्फ़ अेक अहमदाबाद में संगठित लड़ाअी लड़नेके कारण वहाँके मज़दूर १०० फ़ीसदी महँगाअी-भत्ता पा सके हैं। मगर अिन्साफ़की अिस अेक ही मिसाल को भी मिल-मालिकोंने पिछले साल अिण्डस्ट्रियल कोर्ट — मज़दूरों और मिल-मालिकोंके बीच होनेवाले झगड़ोंको निपटानेवाली अदालत — के अेक फ़ैसले के ज़रिये बेकार बना दिया है। अदालतने अिस बिना पर मज़दूरोंका महँगाअी-भत्ता १०० से ७५ फ़ीसदी कर दिया कि अिस अुद्योगके दूसरे मरकज़ोंमें वहाँके मज़दूरोंको पूरा-पूरा भत्ता नहीं दिया जाता। अिससे पता चलेगा कि ज़्यादातर मिल मज़दूरोंको अपनी रहन-सहनका दरजा कम करके काम करना पड़ता था। वे लड़ाअीसे पहलेके दिनोंकी अपनी रहन-सहन के दरजेको टिका न सके। ज़िन्दगीके लिअे ज़रूरी रोज़के अिस्तेमाल की चीज़ोंके दाम और अुन्हें मिलनेवाली मज़दूरीको देखें, तो साफ़ मालूम होता है कि अुनकी मज़दूरी की दरें कम हो गअी हैं, यानी दरअसल जो मज़दूरी अुन्हें मिलनी चाहिये थी, अुससे १५ से २५ फ़ीसदी कम मज़दूरी अुन्हें मिलती है।

निर्ख़-बन्दी

मज़दूरोंसे ताल्लुक़ रखनेवाले सवालोंके अपने अभ्यासके सिलसिलेमें, क़ानूनकी निगाहसे क्लॉथ-कण्ट्रोल-बोर्ड द्वारा, मगर दरअसल मिल-मालिकों द्वारा तैयार की गअी मालकी ऊँची-से-ऊँची क़ीमतोंकी फ़ेहरिस्तें देखनेका मौक़ा मुझे कअी बार मिला है। अिस निर्ख़-नामेकी बारीक़ीसे जाँच की जाय, तो पता चलेगा कि फैन्सी और रंगीन कपड़ेकी दरोंमें बुनियादी दरोंके मुक़ाबले जो अिज़ाफ़ा किया गया है, वह खुली या दिन दहाड़ेकी लूटके सिवा और कुछ नहीं है। मिलोंमें कपड़ा बनाने में बढ़ी हुअी मज़दूरी, ज़रूरी चीज़ोंकी बढ़ी हुअी क़ीमतों, या पदावारकी कमी वग़ैराकी वजहसे जो ज़्यादा ख़र्च लगता है, अुसके मुक़ाबले तैयार मालकी क़ीमतोंमें किया गया अिज़ाफ़ा कहीं ज़्यादा है। थोड़ेमें, मिल-मालिकोंने दिखावा तो यही किया कि वे आम-जनताके हितकी हिफ़ाज़त कर रहे हैं, मगर दरअसल अुन्होंने कण्ट्रोल बोर्डमें हर तरीक़ेसे अपना मुनाफ़ा बढ़ानेकी पूरी-पूरी कोशिश की।

अिस हालतको सुधारनेके अुपाय

मरकज़ी और सूबेकी लोकप्रिय सरकारोंको चाहिये कि वे अिस हालतको अब और ज़्यादा दिनों तक न निबाहें। अुन्हें चाहिये कि वे जल्दी-से-जल्दी, बिना देर लगाये, और बिना अिन मिल-मालिकोंके बनावटी रोने-चिल्लानेकी परवाह किये, अिस सवालको अपने हाथमें लें। अगर ये मिल-मालिक चाहें, तो वे अिस मामलेमें सरकारको गुमराह भी कर सकते हैं। मरकज़ी सरकारको चाहिये कि वह मौजूदा क्लॉथ-कण्ट्रोल-बोर्डको तोड़कर अिस संगठित धोखेबाज़ीका ख़ात्मा कर दे। अिस बोर्डने सिर्फ़ मिल-मालिकोंका भला किया है। अिस बोर्डको तोड़ देनेके बाद अिसके अफ़सरोंको मेरी सुझाअी नअी व्यवस्थामें किसी भी हैसियतसे कोअी काम न सौंपा जाय। कपड़ेकी पैदावार और बिक्रीकी बुराअियोंको दूर करनेके लिअे बतौर अिलाजके और हमेशा काम आनेके ख़यालसे मैं अपने कुछ सुझाव नीचे देता हूँ—

१. भारत-सरकार अेक क़ानून पास करके 'टेक्सटाअिल कण्ट्रोल अेण्ड सप्लाय कमीशन'—यानी कपड़ेका नियमन और बँटवारा करनेवाली अेक संस्था—क़ायम करे। अिसका काम सिर्फ़ आम लोगोंके फ़ायदेका ख़याल रखकर कपड़ेकी पैदावारका नियमन और अुसके बँटवारेका अिन्तज़ाम करना हो।

२. कपड़े और सूतके बँटवारेका काम करनेवाली व्यापारियोंकी मौजूदा पेढ़ियाँ बन्द कर दी जायँ।

www.vinoba.in

३. सूबोंकी सरकारोंको चाहिये कि वे परवाने देकर अिस कामके लिअे नये व्यापारी खड़े करें, और अुनसे काफ़ी नक़द जमानतें लें।

४. अिस कमीशनके किसी भी क़ानून या अुसके किसी भी हुक्मको तोड़नेवालेको जेलकी सज़ाके साथ भारी जुरमानेकी सज़ा दी जाय, और वह पुलिसके तहतका जुर्म (कॉग्निज़ेबल ऑफेन्स) माना जाय।

अहमदाबाद, ४-११-'४६ खण्डुभाअी के० देसाअी

(अंग्रेज़ीसे)

श्रीरामपुरकी डायरी

(पृष्ठ ४८३से आगे)

भगवान्का सहारा लेता है। आप सब अिस अेक चीज़को अच्छी तरह समझ लीजिये कि ज़ालिमका ज़ुल्म तभी बे-लगाम बनता है, जब ज़ुल्मके शिकार बननेवाले लोग अुसे चुपचाप सह लेते हैं। अगर आप सब अपने दिलोंसे डरको निकाल भगायें, तो किसीको आप पर ज़ुल्म करनेकी अिच्छा ही न हो, और कोअी ज़ुल्म करना चाहे भी, तो कर न सके।

नोआखालीमें रहनेका मक़सद

सोमवार, ता० २३ दिसम्बर, १९४६के दिन गांधीजीने प्रार्थनाके बाद जो तक़रीर की थी, हिन्दुस्तानके अेसोशिअेटेड प्रेस द्वारा प्रचारित अुसकी सही रिपोर्ट नीचे दी जाती है —

गांधीजीने कहा — "शुरूमें मुझे चन्द निजी बातोंका ज़िक्र करना है। मेरे नाम आये कअी ख़तों, और अख़बारोंमें छपे बहुतसे लेखों और टीकाओंमें यह कहा गया है कि मेरे बराबर नोआखालीमें ही बने रहनेसे हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच भाअीचारेके पैदा होनेमें रुकावट पड़ती है, क्योंकि यहाँ मेरा अिरादा बंगालकी लीगी वज़ारतको बदनाम करनेका ही है।

"अभी दो दिन पहले ही मैंने अपने बारेमें सुनी अेक अफ़वाहका जवाब देनेकी कोशिश की थी। अफ़वाह यह थी कि मैं यहाँ नोआखालीमें बैठा छिपे-छिपे बड़े पैमाने पर सत्याग्रहकी तैयारी कर रहा हूँ। मैं अिससे पहले भी यह बात साफ़-साफ़ कह चुका हूँ कि लुक-छिपकर या पोशीदा तौरपर मैं कोअी काम कर ही नहीं सकता। अगर मैं पोशदगीका या झुठाअीका सहारा लूँ, तो मेरा सत्याग्रह सत्याग्रह न रहकर दुराग्रह बन जाय।

"आज मैं देख रहा हूँ कि मुझपर यह जो दूसरा अिलज़ाम लगाया गया है, अिसका ज़िक्र अिससे पहले मैं कर ही चुका हूँ, अुसका जवाब देना ज़रूरी हो गया है। मैं साफ़ लफ़्ज़ोंमें यह अैलान करना चाहता हूँ कि जिनके बीच आज कड़ुवाहट पैदा हो गअी है, और जो अेक-दूसरेसे बिलकुल जुदा हो गये हैं, अुन हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच सच्चे दिलकी दोस्ती और भाअीचारा पैदा करनेके अिरादेसे ही मैं बंगाल आया हूँ। जब मैं देखूँगा कि मेरा यह अिरादा अच्छी तरह पूरा हो गया है, तो फिर मेरे लिअे यहाँ ज़्यादा दिन रहनेकी कोअी ज़रूरत न रह जायगी।

"बंगालका राज-काज चलानेवाली लीगी सरकारको परेशान करनेका मेरा कोअी अिरादा कभी हो नहीं सकता। अिसके खिलाफ़, यहाँकी वज़ारतके साथ और यहाँके सरकारी अफ़सरोंके साथ मेरे ताल्लुक़ात बहुत ही दोस्ताना ढब के रहे हैं, और मुझपर अिसकी यह छाप पड़ी है कि वे सब सुलह व शान्ति क़ायम करनेके मेरे अिस मिशनको पसन्द करते हैं। अभीतक मुझको अिस बातका कोअी अिशारा नहीं मिला है कि मेरे यहाँ रहनेसे किसीको भी कोअी परेशानी हो रही है। अगर खुद सरकारको अिसका यक़ीन हो चुका हो, तो अुसका यह फ़र्ज़ है कि वह अपने ज़िला मजिस्ट्रेट और ज़िलेके पुलिस अफ़सरको हिदायत दे कि वे मुझे मेरी ग़लती साबित करके दिखायें। लेकिन अबतक अिन दो में से किसी भी अफ़सरने अिस तरहका कोअी अिशारा तक नहीं दिया है। अगर खुद मुझे यक़ीन हो गया कि यहाँ रहनेमें मुझसे ग़लती हुअी है, तो मैं यहाँसे चले जानेमें ज़रा भी हिचकिचाअूँगा नहीं।

"मेरे पास दूसरी जगह मेरे ध्यान देने लायक़ ढेरों काम पड़ा है। पहला श्रुरुळीकांचन है, जहाँ क़ुदरती अिलाजके मेरे प्रयोग चल रहे हैं; दूसरा सेवाग्राम है, और फिर दिल्ली है, जहाँ मेरी मौजूदगी किसी काम आ सकती है। मेरी यह दिली ख़ाहिश है कि हमारे जिन नेताओंको मुझसे सलाह-मशविरा करनेके लिअे यहाँ अितनी दूर आनेकी तकलीफ़ अुठानी पड़ती है, अुससे मैं अुन्हें बचा लूँ। लेकिन निजी तौरपर मुझे अिस बातका पक्का यक़ीन हो गया है कि मैंने जो काम यहाँ अपने सिर लिया है, वह समूचे हिन्दुस्तानके लिअे सबसे ज़्यादा अहमियत रखता है। अगर मैं अपने अिस मिशनमें कामयाब हुआ, तो हिन्दुस्तानके भविष्य पर अुसका गहरा प्रभाव पड़ेगा, और अगर मुझे कहने दिया जाय, तो मैं कहूँगा कि सारी दुनियाकी सुलह और शान्तिके भविष्य पर भी अुसका असर पड़ेगा। क्योंकि अिस कामसे अहिंसाके बारेमें हमारी श्रद्धाकी परख हो जायगी।

"बिहारमें पिछले दिनों जो ज़ुल्म हुअे, अुनके बारेमें बिहार प्रान्तकी मुस्लिम लीगकी तरफ़से निकाली गअी रिपोर्टकी अेक कॉपी मेरे नाम भेजी गअी थी, और वह मुझे मिली है। अुसे मैं बहुत ग़ौरके साथ पढ़ गया हूँ। पढ़ते-पढ़ते मैंने महसूस किया कि अुसमें बहुतसी बातें बढ़ा-चढ़ा कर लिखी गअी हैं। ताहम अुस रिपोर्टकी बिना पर मैंने अपनी तरफ़से पूछ-ताछ शुरू की है। अिसमें तो कोअी शक नहीं कि बिहारमें जो वारदातें हुअीं, अुनमें बहुत ज़्यादा हैवानियत थी, चुनाँचे वे अिस क़ाबिल थीं कि कड़े-से-कड़े लफ़्ज़ोंमें अुनकी निन्दा की जाय। रिपोर्ट में जो बातें बढ़ा-चढ़ाकर कही गअी हैं, अुनकी वजहसे समूची तसवीरकी असलियतका जो घिनौनापन है, वह कुछ कम हो जाता है। मुझे यह यक़ीन दिलाया गया है कि अब बिहारमें शान्ति छा गअी है। अिसका विश्वास हो जाने पर ही मैंने अपनी मामूली ख़ुराक शुरू की थी।"

फिर यह समझाते हुअे कि वे ख़ुद बिहार क्यों नहीं गये, गांधीजी ने कहा — "वहाँ न जानेकी अेक ही वजह थी, और वह यह थी कि यहाँ अितनी दूर बैठे-बैठे भी मैं अच्छी तरह वहाँके काम पर अपना निजी असर डाल सकता था। लेकिन लीगकी रिपोर्टमें बिहारकी जिस हालतका बयान किया गया है, अुसके आज भी वैसी ही होनेकी कोअी वजह मुझे मिले, और मुझको यह विश्वास हो जाय कि दोस्तोंने मुझे ग़लत यक़ीन दिलाकर भुलावेमें डाला था, तो बेशक मेरी जगह बिहारमें ही होगी, और अिसके साथ ही मैं यह भी क़बूल कर लूँगा कि अुस हालतमें मैं अिस देहके साथ जी नहीं सकूँगा, और जिन्दा लोगोंकी दुनियामें मेरे लिअे कोअी जगह न रह जायगी।

लेकिन अिसके साथ ही मैं यहाँ लोकमतके नेताओंको अेक चेतावनी दिये बिना नहीं रह सकता। अुनके सिर गहरी ज़िम्मेदारी है। किसी भी बातको माननेके लिअे बेसबर बनी हुअी जनता अुनकी बातको सच ही मानेगी। और यह किसीसे छिपा नहीं है कि अिस तरहकी बातों पर यक़ीन करके लोग किस रास्ते बहक जाते हैं, और अुसके कितने बुरे नतीजे निकलते हैं। यह कहते वक़्त मेरे सामने यह ख़याल नहीं है कि ये नेता मुस्लिम लीगके हैं या कांग्रेसके।

(अंग्रेज़ीसे)

विषय-सूची

			पृष्ठ
श्रीरामपुरकी डायरी	...		
हिन्दुस्तानके पुतलीघर	...	किशोरलाल घ० मशरूवाला	४८१
हिन्दुस्तानका वस्त्र-व्यवसाय	...	खण्डुभाअी क० देसाअी	४८४
			४८५

www.vinoba.in